Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

हिन्दी, पेपर II

भाग – 2

काव्य शास्त्र एवं साहित्य I

(स्नातक स्तर)

SIERRA INNOVATIONS

क्र.सं.	अध्याय हिन्दी	पृष्ठ सं.
1.	शब्द शक्ति	1
2.	अलंकार	9
3.	छंद	29
4.	काव्य रस	43
5.	काव्य रितियां	70
6.	काव्य गुण	74
7.	काव्य दोष	78
8.	आदिकाल	85
9.	भक्तिकाल	106

शब्द शक्ति

- शब्दों के अंतर्निहित अर्थ को व्यक्त करने वाले व्यापार को शब्द शक्ति कहते है। किसी शब्द के उच्चारण एवं अर्थ प्रकाशन की प्रक्रिया के मध्य एक अप्रत्यक्ष प्रक्रिया घटित होती है वहीं शब्द शक्ति कहलाती है।
- अभीष्ट अर्थ श्रोता तक पहूंचाने की क्षमता अथवा शब्द में छिपे हुए तात्पर्य को प्रसांगानुसार स्पष्ट करने की सामर्थ्य ही शब्द शक्ति है।
- शब्द की वह शक्ति या व्यापार जिसके माध्यम से उसका अर्थ ज्ञात होता है, शब्द शक्ति कहलाता है।
- शब्द शक्तियों का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित विवेचन व निरूपण करने वाले आचार्य मम्मट थे।
- **आचार्य मम्मटः–**
  तद् दोषों शब्दार्थो सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि। दोष रहित अीि सहित, गुण व अलंकार से युक्त शब्द ही काव्य है। शब्द की यही शक्ति शब्द शक्ति कहलाती है।
- **चिन्तामणि के अनुसार**
  जो सुनि परे सो शब्द है, समुझिपरै सो अर्थ।
- शब्द की जिस शक्ति से किसी शब्द के सबसे साधारण, लोक प्रचलित अथवा मुख्य अर्थ का बोध हो, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहा जाता है।
- जिस शब्द को सुनते ही अथवा पढते ही श्रोता या पाठक उसके सबसे सरल, प्रचलित अर्थ को बिना अवरोध के ग्रहण करता है, वह अभिधा शब्द शक्ति कहलाता है।
- पण्डित रामदहिन मिश्र ने साक्षात सांकेतिक अर्थ को अभिधा कहा है तो आचार्य मम्मट ने मुख्यार्थ का बोध कराने वाले व्यापार को अभिधा व्यापार कहा है।
- अभिधेयार्थ शब्द वाचक कहलाता है तथा प्राप्त अर्थ वाच्यार्थ कहलाता है।
- शब्द उच्चारण के साथ ही हमारे मन, कल्पना और अनुभूमि पर प्रभाव डालता है। जैसे– सांप शब्द का उच्चारण करते ही मन मे भय का संचार होता है। अतः जिस शक्ति के द्वारा यह अर्थगत प्रभाव पडता है वहीं शब्द शक्ति कहलाती है।
- शब्द प्रसंगानुसार उनके अर्थ तथा अर्थ प्रकट की शक्ति तीन प्रकार की होती है–
  1. वाचक – वाच्यार्थ – अभिधा
  2. लक्ष्यक – लक्ष्यार्थ – लक्षणा
  3. व्यंजक – व्यंग्यार्थ – व्यंजना
- ध्वनिवादियों के अनुसार शब्द शक्ति तीन प्रकार की होती है–
  1. अभिधा
  2. लक्षणा
  3. व्यंजना
- मीमांसकों के अनुसार शब्द शक्ति 3 प्रकार की होती है–
  1. अभिधा
  2. लक्षणा
  3. तात्पर्या
- भट्टनायक के अनुसार शब्द शक्ति 3 प्रकार की होती है–
  1. अभिधा
  2. भोजकत्व
  3. भावकत्व

छंद

छंद का शाब्दिक अर्थ — बंधन

- छंद शब्द संस्कृत की छद् धातु में असुन् प्रत्यय लगने से बना है।
  छंद शब्द अनेकार्थवाची है जिसके अर्थ निम्न है :–
  1. बांधना 2. फुसलाना 3. अक्षर संख्या का परिणाम
  4. कामना करना 5. प्रसन्न करना 6. आकांक्षा करना 7. आच्छादित करना

छंद की परिभाषा — जिस शब्द योजना से वर्णो या मात्राओं और यति–गति का शेष नियम हो उसे छंद कहते हैं।

- विश्वनाथ के अनुसार :– "छन्दो बंद्ध पंद पद्यम" अर्थात् – विशिष्ट छन्द बंधी हुई रचना को छंद कहते हैं।
- **'यद् अक्षर परिणामः तच्छंद।"**
  ऐसी रचना जिनमें अक्षरों की मात्रा का ध्यान रखा जाता है वह छंद कहलाता हैं।

छंद का महत्व

- छंद रसों के अनुकूल शब्द योजना व वर्ण विन्यास में सहायक हैं।
- छंद कविता में नाद सौंदर्य, लय, संगीतात्मकता उत्पन्न कर काव्य सौंदर्य की वृद्धि करते हैं।

अभिनव गुप्त — छंद का प्रमुख कार्य रस या भाव व्यंजना में सहायता करना हैं।

- छंदों में युक्त कविता शीर्घ कंष्स्थ होकर बहुत समय तक याद रहती हैं।

आचार्य शुक्ल — नाद सौंदर्य में कविता की आयु बढ़ती हैं।

- छन्द शास्त्र को वेद शास्त्र के प्रमुख छः अंगों में स्थान दिया गया हैं। छंद को वेद का पैर माना गया है अन्य अंग अग्रलिखित हैं।

छ : वेदांग		कल्पित अंग
1	व्याकरण	मुख
2	छन्द	पैर
3	ज्योतिष	आँख
4	निरूक्त	कान
5	शिक्षा	नाक
6	कल्प	हाथ

छंद शास्त्र की परम्परा — छंद शास्त्र के प्रथम आचार्य पिंगल थे जिनका छंद शास्त्र से संबंधित प्रथम ग्रंथ **छंद सूत्र** ही हैं।

- वैदिक साहित्य छंद शास्त्र के प्रवर्तक – ब्रह्मा
- लौकिक साहित्य छंद शास्त्र के प्रवर्तक – पिंगल
- नोट :– ब्रह्मा जी मे पिंगल तक छंद शास्त्र का मौखिक ज्ञान निम्न प्रकार था–
- ब्रह्मा – वृहस्पति – च्यवन – मांडव्य – सैतव – यास्क – पिंगल

छंद शास्त्र के प्रमुख आचार्य व प्रसिद्ध ग्रंथ

क्र . स.	आचार्य	ग्रंथ
1.	पिंगल	छंद सूत्र
2.	ज्ञानश्रयी	छंदो विचिति
3.	जयदेव	जयदेव छंद
4.	जयकीर्ति	छन्दोडनुशासन
5.	केदारभट्ट	वृत्तरत्नाकर
6.	क्षेमेन्द्र	सुवृत्ततिलक
7.	हेमचन्द्र	हैमछन्दोडनुशासन
8.	गंगादास	छन्दोमज्जरी
9.	भट्ट शेखर	वृतभोक्तिक
10.	कृष्ण भट्ट	वृतमुक्तावली

- हिन्दी साहित्य मे संबंधित छंद शास्त्र के प्रमुख ग्रंथ :–

1.	केशवदास	छंदमाला
2.	मतिराम	छंदसार पिंगल
3.	सुखदेव मिश्र	वृत्त विचार
4.	भिखारीदास	छंदार्णव
5.	नारायणदास	छंदसार
6.	हरिदेव	छंद पयोनिधि
7.	अमीर दास	वृत चन्द्रोदय
8.	जगन्नाथ प्रयाद 'भानु'	छंद प्रभाकर
9.	नारायण प्रसाद	पिंगल सार
10.	अवधनारायण उपाध्याय	नवीन पिंगल
11.	परमेश्वरानन्द	छंद शिक्षा
12.	परमानन्द शास्त्री	पिंगल पियूष
13.	रघुनन्दन शास्त्री	हिन्दी छंद प्रकाश
14.	पद्माकर	छंद मजरी
15.	हलायुद्ध	वृत्त संजीवनी टीका
16.	रामनरेश त्रिपाठी	पद्य रचना

छंद का स्वरूप :– छंद के प्रत्येक चरणो में वर्णो या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती हैं। अथवा मात्राओं की संख्या या गिनती मे पद रचना होती हैं।

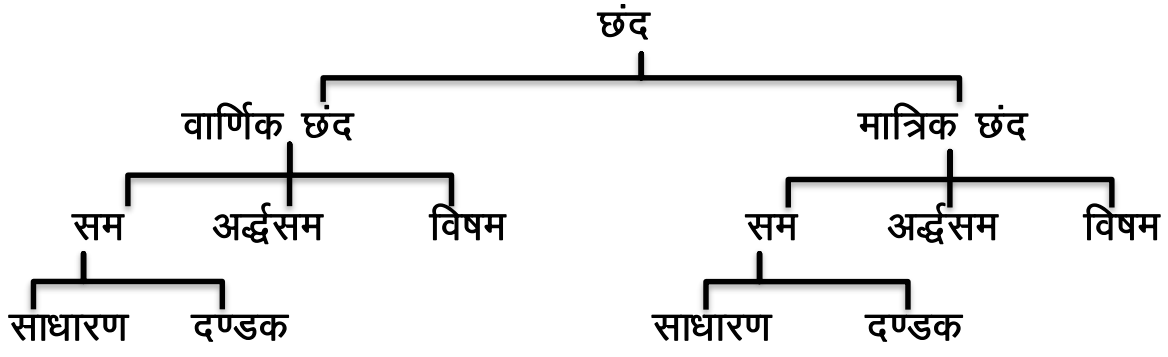

- **वार्णिक छंद —** जिन चरणों के वर्णो में वर्णों की संख्या निश्चित एव गणबंद्ध रहती हैं अर्थात् जिस छंद की गणना वर्णो के आधार पर होती है उसे वार्णिक छंद कहते हैं। जैसे :– कवित, सवैया, द्रुत विलिम्बित, वंशस्थ आदि।
- **मात्रिक छंद —** जिन छंदो के चरणों में मात्राओं की संख्या निर्धारित रहती है, अर्थात् जिन छंदो की गणना मात्राओं के आधार पर की जाती है, उन्हें मात्रिक छंद कहते हैं। जैसे – दोहा, सोरठा, चोपाई।
- **सम मात्रिक छंद —** जिस छंद के सभी चरणों में समान मात्रा या संख्या हो उन्हें सममात्रिक छंद कहते हैं। जैसे :– चोपाई छंद
- **अर्द्धसम मात्रिक छंद —** जिस छंद में पहले तीसरे एवं दूसरे चौथे चरणों में समान मात्राएँ हो, वह अर्द्धसम मात्रिक छंद कहलाता हैं। जैसे :– दोहा
- **विषम मात्रिक छंद —** जिस छंदो के प्रत्येक चरण में भिन्न भिन्न मात्राएँ हो, उन्हें विषम मात्रिक छंद कहते हैं। जैसे :– छप्पय
- **सम वार्णिक छंद —** जिन छंदो के सभी चरणों में समान वर्ण हो, उन्हें समवर्णिक छंद कहते हैं। जैसेः– सवैया।
- **अर्द्धसम वार्णिक छंद —** जिन छंदो के प्रथम–तृतीय एवं द्वितीय–चतुर्थ चरणों में समान वर्ण योजना हो, वहाँ अर्द्धसमवार्णिक छंद होता हैं।
- **विषम वार्णिक छंद —** जिन छंदो के सभी चरणों की वर्ण योजना असमान हो, उन्हें विषम वार्णिक छंद कहते हैं।
- **साधारण छंद —** वार्णिक छंदो के अन्तर्गत प्रत्येक चरण में 1– 26 तक की वर्ण संख्या वाले छंद तथा मात्रिक छंदो के अन्तर्गत प्रत्येक चरण में 1 – 32 तक की मात्रा संख्या वाले छंद साधारण छंद कहलाते हैं।
- **दण्डक छंद —** वार्णिक छंदो के अन्तर्गत प्रत्येक चरण में 26 से अधिक वर्ण संख्या वाले छंद तथा मात्रिक छंदो के अन्तर्गत प्रत्येक चरण में 32 से अधिक मात्रा संख्या वाले छंद दण्डक छंद कहलाते हैं।
- **वर्ण —** स्वर अथवा स्वर युक्त व्यंजन को छंद शास्त्र में वर्ण कहा जाता हैं।
- **लघु वर्ण —** ह्रस्व अक्षर एक मात्रा वाला वर्ण ह्रस्व होता है, इसे लघु वर्ण कहतें हैं। जैसें :– अ,इ,उ,क,खि आदि। नोट :– लघु का चिह्न '।' होता हैं।
- **गुरू वर्ण —** एक से अधिक मात्रा वाले वर्ण, दो मात्राएँ वाले, संयुक्त वर्ण दीर्घ होता है, इसे गुरू कहतें हैं, जैसें :– आ, ई, ऊ, ऐ, ओ
- **यति —** प्रत्येक छंद के बीच में कुछ पदों पर विराम करना पड़ता है, उस विराम स्थल को यति या विराम कहते हैं।
- **गति —** छंद में समाहित संगीतात्मक लय को गति कहतें हैं गति का उचित विधान न होनें से गति भंग दोष आ जाता हैं।
- **तुक —** छंद के चरणो के अन्त में ध्वनि की समानता को तुक कहते हैं। जिन छंदों के चरणों की अन्तिम ध्वनियाँ मिलती है, उन्हें तुकान्त छंद व जिनकी अन्तिम ध्वनियाँ नहीं मिलती हैं, उन्हें अतुकान्त छंद कहतें हैं।
- **पद/पाद —** प्रत्येक छंद में प्रायः चार मुख्य भाग होते हैं ,जो नियमानुसार निश्चित विरामों में अलग किये जाते हैं। इन भागों को चरण, पद एवं पाद कहते हैं।
- **क्रम —** छंद में प्रत्येक चरण में वर्णो या मात्राओं का निश्चित अनुपात से प्रयोग क्रम कहलाता ळें
- **दल —** किसी भी छंद को लिखते समय यदि एक से अधिक चरणों को एक ही पंक्ति में लिख देना दल कहलाता हैं।

मात्रा से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- मात्रा दो प्रकार की होती है (1) लघु (2) गुरू
- लघु मात्रा का चिह्न '. ' खड़ी पाई व गुरू मात्रा का चिह्न '. ' होता हैं।
- संयुक्त अक्षर से पहले के वर्ण को गुरू माना जाता हैं जैसे जज्बात शब्द में 'ज्बा' से पूर्व 'ज' शब्द को गुरू माना जाता हैं।
- छंद के सम चरणान्त में लघु वर्ण को आवश्यकता पड़ने पर दीर्घ या गुरू माना जाता हैं।
- मात्रा हमेशा स्वर वर्ण पर ही प्रयुक्त होती हैं, व्यंजन वर्ण पर नहीं।
- जैसे :– ज्योत्स्ना
- अगर किसी ह्रस्व स्वर के बाद आधा अक्षर हो एवं उसके बाद 'ह' वर्ण हो तो वहाँ उस ह्रस्व स्वर पर लघु मात्रा ही प्रयुक्त होती हैं। जैसे :– कुल्हाडा
- ह्रस्व स्वर के साथ लघु मात्रा एवं दीर्घ स्वर के साथ सदैव गुरू मात्रा प्रयुक्त होती हैं। जैसे :– जीवन
- यदि किसी ह्रस्व स्वर के साथ अनुस्वार लगा हो तो, उस ह्रस्व स्वर पर गुरू मात्रा प्रयुक्त होती हैं। जैसे :– चंदन
- यदि ह्रस्व स्वर के बाद हलन्त् वर्ण , विसर्ग लिखा हो तो वहाँ उस ह्रस्व स्वर पर भी गुरू मात्रा ही प्रयुक्त होती हैं। जैसे :– दु : ख = ऽ।
- यदि किसी स्वर पर चन्द्रबिन्दु लगा हो तो वहाँ उस ह्रस्व स्वर पर लघु मात्रा ही लगेगी। जैसे : हँसना
- अगर दीर्घ स्वर के साथ चन्द्रबिन्दु या अनुस्वार आता है, तो दोनों ही स्थितियों में गुरू मात्रा प्रयुक्त होती हैं। जैसे :– हाँसी
- **गण :–** वर्णों या मात्राओं का समूह गण कहलाता हैं। वर्ण तथा मात्राओं कें भेद से गणों के दो भेद होते हैं। (1) वर्णात्मक गण (2) मात्रात्मक गण
- वर्णात्मक गण तीन वर्णो का समूह होता हैं। वाक्य के वर्णो को तीन– तीन वर्णो में विभक्त करने पर वह तीन वर्णो का समूह एक गण बन जाता हैं। गण आठ होते हैं। गुरू (ऽ), लघु (।) को तीन समूह में भिन्न– भिन्न प्रकार में लिखने पर यह स्वरूप बनता हैं।
- **गणों के स्वरूप को "यमाताराज भान सलगा" सूत्र में याद रखा जाता हैं।**

क्र.स.	गण	सूत्राक्षर	मात्रा चिन्ह्	उदाहरण	शुभा शुभ
1.	यगण	यमाता	ISS	करेला	शुभ
2.	मगण	मातारा	SSS	माताजी	शुभ
3.	तगण	ताराज	SSI	कालाप	अशुभ
4.	रगण	राजभा	SIS	वन्दना	अशुभ
5.	जगण	जभान	ISI	कलाप	अशुभ
6.	भगण	भानस	SII	भारत	शुभ
7.	नगण	नसल	III	नमन	शुभ
8.	सगण	सलगा	IIS	कहना	अशुभ

क्र.स.	गण	लक्षण	मात्रा संख्या
1.	यगण	आदि गुरू	(5)
2.	मगण	तीनों गुरू	(6)
3.	तगण	अन्त लघु	(5)
4.	रगण	मध्य लघु	(5)
5.	जगण	मध्य गुरू	(4)
6.	भगण	आदि गुरू	(4)
7.	नगण	तीनों लघु	(3)
8.	सगण	अंतिम गुरू	(4)

दोहा

- यह अर्द्धसम मात्रिक छंद है।
- दोहे के प्रथम और तृतीय चरण में 13 13 मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में 11 – 11 मात्राएँ होती हैं।
- इसमें तु क द्वितीय व चतुर्थ चरणों पर पाया जाता हैं।
- सम चरणों के अन्त में लघु वर्ण आता हैं।
- यति प्रत्येक चरण के अन्त में आती हैं।
- इसके विषम चरणों के आदि (शुरू) में जगण नहीं आता हैं।
  - **उदाहरण**

    (1) श्री गुरू चरण सरोज रज , निज मन मुकुर सुधार ।
    S ।। ।।। ।S। ।। ।। ।। ।।। ।S।
    वरणों रघुवर विमल यश , जो दायक फल चार ।
    ।। S ।।।। ।।। ।। S S।। ।। S।

    (2) काज परे कछु और है, काज सरै कछु और ।
    S । ।S । । S। S S। । S ।। S।
    रहिमन भँवरी के परे , नदी सिरावत मौर ।
    ।।।। ।।S S ।S ।S । S ।। S।

    (3) साँच बराबर तप नहीं , झूठ बराबर पाप ।
    S। ।S ।। ।। ।S S। ।S ।। S।
    जके हृदय साँच है, ताके हृदय आप।।
    S S S।। S। S S S S।। S।

सोरठा

- सोरठा अर्द्धसम मात्रिक छंद हैं।
- सोरठा के प्रथम व तृतीय चरण में 11–11 मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में 13– 13 मात्राएँ होती हैं।
- इसमें तुक भी प्राय विषम चरणों पर ही होता हैं।
- इसके सम चरणों के शुरू में जगण आना वर्जित हैं, जबकि विषम चरणों के अन्त में एक लघु वर्ण आना आवश्यक हैं।
- यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती हैं।
- सोरठा छंद दोहा छंद के विपरीत लक्षणों वाला छंद होता हैं।
  - **उदाहरण :–**

    (1) सुनत सुमंगल बैन , मन प्रमोद तन पुलक भर ।
    ।।। ।S।। S। ।। ।S। ।। ।।। ।।
    सरद सरोरूह नैन , तुलसी भरे सनेह जल।।
    ।।। ।S।। S। ।। S ।S ।S। ।।

    (2) सुनि केवट के बैन , प्रेम लपेटे अटपटे।
    ।। S।। S S। S। ।S S ।।।S
    बिहसिं करूना ऐन , चितहि जानकी लखन तन ।।
    ।।S ।।S S। ।।। S।S ।।। ।।

    (3) कपि करि हृदय विचार , दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
    जनु अशोक अंगार, लीन्हि हरषि उठिकर गहउ।।

चौपाई

- चौपाई सम मात्रिक छंद है
- इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।
- चरण के अन्त में जगण, तगण नहीं होते हैं।
- तुक सदा पहले चरण का दूसरे चरण के साथ व तीसरे का चौथे के साथ मिलती हैं।
- यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती हैं।
- अन्त में दो लघु या दो गुरू आते हैं।

➢ **उदाहरण :–**

(1) जाकी रही भावना जैसी ।
S S I S S I S S S = 16
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी ।।
I I S I I S S S I S S = 16

(2) रघुकुल रीति सदा चलि आई।
I I I I S I I S I I S S = 16
प्राण जाय पर वचन न जाई।।
S I S I I I I I I S I = 16

(3) जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।
I I I I S I S I I S I I = 16
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।।
I I I S I I S I I S I I = 16

(4) धीरज धरम मित्र अरू नारी।
S I I I I I S I I S S = 16
आपद काल परखिये चारी।।
S I I S I I I S S S = 16

गीतिका छंद

- यह सममात्रिक छंद हैं।
- इसकी प्रत्येक पंक्ति में 26 मात्राएँ होती हैं।
- इस छंद में 14, 12 मात्राओं पर यति होती हैं।
- चरण के अन्त में लघु गुरू होता हैं।
- इसमें तुक प्राय : दो दो चरणों में मिलते हैं।

➢ **उदाहरण :–**

(1) धर्म के मग में अधर्मी से कभी डरना नहीं।
S I S I I S I S S S I S I I S I S = 26
चेत कर चलना कुमारग में कदम धरना नहीं।
S I I I I S I S I I S I I I I I S I S = 26

(2) हे प्रभो ! आनंददाता , ज्ञान हमको दीजिए
S I S S S I S S S I I S S I S = 26
शीघ्र सारे दुर्गुणों को , दूर हमसे कीजिए
S I S S S I S S S I I S S I S = 26
लीजिए हमको शरण में , हम सदाचारी बनें
S I S I I S I I I S I I I S S S I S = 26
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक , वीर व्रत धारी बनें।।
S I S S S I S I I S I I S S I S = 26

हरिगीतिका छंद

- यह सममात्रिक छंद हैं।
- इस छंद के प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं।
- इसमें 16,12 मात्राओं पर यति होती हैं।
- प्रत्येक चरण के अन्त में लघु गुरू (।S) अवश्य आता हैं।
- हरिगीतिका छंद में 5,12,19,26 वीं मात्रा लघु होती हैं।
- इस छंद में तुक सम चरणों में मिलता हैं।

  ➢ **उदाहरण :–**

  (1) कहते हुए यों उत्तरा के, नैत्र जल से भर गए।
  । । S । S S S । S S S । । । S । । । S = 28
  हिम के कणों से पूर्ण मानों : हों गये पंकज गए।"
  । । S । S S S । S S S । S S । । । S = 28

  (2) संसार की समर स्थली में , वीरता धारण करो।
  S S। S । ।S । S S S । S S । । । S = 28
  चलते हुए निज इष्ट पथ पर , संकटों से मत डरो
  । । S ।S । । S । । । । । S । S S । । । S = 26

  (3) मत मुखर होकर बिखर यों तू , मौन रह मेरी व्यथा ।
  । । । । । S । । । । । S S S । । । S S । S = 28
  अवकाश है किसको सुनेगा कौन यह तेरी कथा ।।
  । । S । S । । S । S S S । । । S S । S = 28

रोला छंद

- रोला सममात्रिक छंद हैं।
- इसके प्रत्येंक चरण में 24, 24 मात्राएँ होती हैं।
- इसमें 11 , 13 मात्राओं पर यति होती हैं।
- दो दोहे जुड़कर एक रोला छंद बनता हैं।

  ➢ **उदाहरण:–**

  (1) हुआ बाल रवि उदय, कनक नभ किरणें फूटी ।
  । S S । । । । । । । । । । । । । S S S
  भरित तिमिर पद परम, प्रभामय बनकर फूटी ।
  । । । । । । । । । । । । S। । । । । । S S
  जगत जगमगा उठा, विभा वसुधा पर फैली ।
  । । । । । । S । S । S । । S । । S S
  खुला अलौकिक ज्योति , पुंज को मंजुल थैली ।
  । S । S । । S । S । S S । । S S

  (2) नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुंदर हैं
  SS । । । ।S । । । । । । । । S । । S
  सूर्य चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर हैं
  S । S । । । । । । S । S S S । । S
  नदियां प्रेम प्रवाह फूल तारा मण्डल है
  । । S S । । S । S । S S S । । S
  बन्दीजन खगवृन्द शेष फन सिंहासन है।।
  S S । । । । S । S । । । S S । । S

  (3) नन्दन वन था जहाँ, वहाँ मरूभूमि बनी हैं।
  S । । । । S । S । S । । S । । S S
  जहाँ सघन थे वृक्ष, वहाँ दावाग्नि घनी हैं।
  । S । । । S S । S । S S । । । S
  जहाँ मधुर मालती, सुरथि रहती थी फैली ।

I S I I I S I S I I I I I S S S S
फूट रही है आज, वहाँ पर फूट विषैली ।।
S I I S S S I S I I S I I S S

उल्लाला छंद

- यह अर्द्धसम मात्रिक छंद हैं।
- इसके विषम चरणों में 15– 15 व समचरणों में 13–13 मात्राएँ होती हैं , अर्थात इसमें 28 मात्राएँ होती हैं।
- इसमें यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती हैं।
- इसमें तुक सम चरणों में होता हैं।
- उल्लाला छंद मात्रिक दृष्टि से हरिगीतिका से मिलता है, इसमें यति का अन्तर होता हैं।

➢ **उदाहरण :–**

(1) करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की
I I S I I S I I S I S I I S S I I S I S
हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की ।
S S I S I S S I S I I I S I S S I S

(2) हे! शरणदायिनी देवि तू , करती सबका त्राण हैं।
S I I I S I S S I S I I S I I S S I S
तू ! मातृभूमि संतान हम , तू जननी तू प्राण हैं।
S S I S I S S I I S I I S S S I S

द्रुतविलम्बित छंद

- यह वार्णिक सम छंद हैं।
- इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण , भगण , भगण, रगण, होते हैं।
- प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं।
- इसमें यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती हैं।
- यह चार चरणों का अतुकान्त छंद होता हैं।

➢ **उदाहरण**

(1) दिवस का अवसान समीप था
I I I S I I S I I S I S
गगन था कुछ लोहित हो चला
I I I S I I S I I S I S
तरू शिखा पर थी अब राजती
I I I S I I S I I S I S
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रथा ।
I I I S I I S I I S I S

(2) गगन मण्डल में रज छा गई
I I I S I I S I I S I S
दश दिशा बहु शब्दमयी हुई
I I I S I I S I I S I S
विशद गोकुल के प्रति मेह में
I I I S I I S I I S I S
बह चला वर स्त्रोति विनोद का।।
I I I S I I S I I S I S

कवित छंद

- यह दण्डक श्रेणी का वार्णिक मुक्त छंद हैं।
- इसके प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं।
- इसमे 16, 15 पर यति होती हैं। अथवा 8,8,8,7 पर यति होती हैं।
- यह वार्णिक गणमुक्त छंद हैं।
- इसका अन्तिम वर्ण गुरू होता हैं, अन्त में गुरू के बाद लघु नहीं आता हैं।
- निराला ने कवित छंद को हिन्दी का जातीय छंद कहते हैं।
  - **उदाहरण**

(1) पात भरी सहरी सकल सुत बारे बारे,
केवट की जाति कछु वेद न पढाइहौं।
मेरो परिवार सब याहि लागि राजाजु हौं,
दीन वित्त – हीन कैसे दूसरी गढ़ाइ हौ।।

(2) बरन बरन तरू फूले उपवन बन,
सोई चतुरंग संग दल लहियत है
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर काकिल हैं,
गुंजत मधूप गन गुन गहियत हैं।।

(3) सहज विलास हास , पिय की हुलास तजि,
दुख के निवास प्रेम , पास पारियत है

(4) करम को मूल तन , तन मूल जीव जग,
जीवन को मूल अति आन्नद ही धरिबो।
कहै, पदमाकर ज्यौं आन्नद को मूल राज,
राजमूल केवल प्रजा को भौन भरिबौं।

छप्पय छंद

- यह विषम मात्रिक छंद हैं।
- छप्पय का अर्थ है छ : पदों वाला ।
- यह रोला और उल्लाला से बना हुआ मिश्रित छंद है
- इसमें छः पंक्तियाँ होती हैं प्रथम चार पंक्तियों में 24–24 मात्राएँ (11,13 पर यति) तथा अंतिम दोनों पंक्तियों में 28– 28 मात्राएँ होती है (15,13 पर यति होती है)
- प्रथम चार पंक्तियों में रोला व अंतिम दो पंक्तियों में उल्लाला छंद होता हैं।
  - **उदाहरण** :– ऽऽ।। ।।ऽ। ।।। ।। ।।ऽ।। ऽ

(1) नीलाम्बर परिधान हरित यह पर सुंदर हैं।
सूर्यचन्द्र युग मुकुट , मेखला रत्नाकर हैं।
नदियाँ प्रेम प्रवाह , फूल तारामण्डल हैं।
बंदीजन खग वृन्द शेषफन सिंहासन हैं।
करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस देश की ।
हे मातृभूमि तू सत्य ही , सगुण मूर्ति सर्वेश की ।।

(2) जहाँ स्वतन्त्र विचार , न बदले मन में मुख में ।
जहाँ न साधक बने, सबल निबलों के सुख में।
सबको जहाँ समान , निजोन्नति का अवसर हो।
शांति दायिनी निशा, हर्ष सूचक वासर हो

जब भांति सुशासित हो जहाँ , समता के सुख का नियम।
बस उसी स्वतंत्र स्वदेश में, जागे हैं जगदीश हम।।

(3) सो प्रसाद जो अधिक सरल कविता छति छावै
S ।S। S ।।। ।।। ।।S ।। SS =24
सुनत मात्र ही शब्द अर्थ को बोध लगावै।
सूखे ईंधन माँहि अग्नि ज्यों देर न लावै,
भूमि ढार जिमि पाय नीर आपहुँ चलि जावै।।
सुकवि विहार त्यों रसन्ह में सब रचना इत भाखिये।
।। ।S। S ।S। S।। ।।S।। S।S =28
अरू सब समास में सम्मिलित शुद्ध सरलता राखिये।।

कुण्डलिया छंद

- कुण्डलिया छंद में कुल 6 चरण होते हैं।
- यह विषम मात्रिक छंद हैं।
- इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं।
- कुण्डलिया छंद दोहा व रोला छंद से मिलकर बनता हैं, जिसमें प्रारम्भ के दो पदों का एक दोहा और फिर चार पदों का रोला जोड़कर कुण्डलिया छंद की रचना होती हैं।
- कुण्डलिया छंद जिस शब्द से आरम्भ होता है, उसी शब्द से समाप्त होता हैं।
- कुण्डलिया छंद में दोहे का अन्तिम चरण रोला के प्रारम्भ में आता हैं तथा दोहे का प्रथम शब्द रोला का अंतिम पद होता हैं। कुण्डलिया छंद को गाथा छंद भी कहते है।

➢ **उदाहरण :–**

(1) दौलत पाय न कीजिये , सपनें में अभिमान।
S।। S। । S।S ।।SS ।।S। =24
चंचल जिय दिन चारि को, ठाऊँ न रहत निदान।।
S।।।। ।। S। S S। । ।।।।S। =24
ठाऊँ न रहत निदान , जियत जग में जस लीजै।
S। । ।।। ।S। ।।। ।। S।। SS =24
मीठे वचन सुनाय , विनय सब ही की कीजै।
SS ।।। ।S। ।।। ।। S S SS =24
कह गिरधर कविराय , अरे यह सब घट तौलत।
।।।।।। ।।S। ।S।। ।। ।। S।। =24
पहुन निस दिन चारि , रहत सब ही के दौलत।
S।। ।। ।। S। ।।।।। S S S।। =24

(2) बिना विचारे जो करे सो पाछे पछिताय।
।S ।SS S ।S S SS ।।S। =24
काम बिगारे आपनो जग में होत हंसाय ।।
जग में होत हंसाय चित्त में चैन न पावै ।
खान पान सम्मान राग रंग मनहि न भावै।।
कह गिरिधर कविराय , दु : ख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माँहि , कियो जो बिना विचारे।।
।।।। S ।। S। ।S S ।S ।SS =24

(3) बीती ताहि बिसारि दै, आगे की सुधि लेय ।
जो बनि आवे सहज में , ताही में चित देय।
ताही में चित देय , बात जो ही बनि जावे।
दुरजन हंसे न कोय , चित्त में खेद न पाये।
कह गिरिधर कविराय , यहै कर मन पर बीती।
आगे की सुधि लेप , समुझि बीती सो बीती ।।

S S S I I S I I I I S S S S S = 24

(4) लाठी में गुण बहुत है , सदा राखिये संग।
S S S I I I I I S I S S I S S I = 24
गहरे नद नाले जहाँ , तहाँ बचावे अंग।।
तहाँ बचावे अंग झपटि कुत्ते को मारै।
दुश्मन दावागीर होय ताहू को झारै।।
कह गिरधर कविराय सुनो हो धुर के बाढी ।
सब हथियारन छाँडि हाथ में लीजैं लाठी।।
I I I I S I I S I S I S S S S S = 24

सवैया छंद

- सवैया वार्णिक सम छंद होता हैं।
- इसके प्रत्येक चरण में 22– 26 वर्ण होते हैं।
- इस छंद में श्रृंगार व करूण रस की विशेष रूप सें अनुभूति होती हैं।
- गणों की दृष्टि से सवैया चार प्रकार का होता हैं।
  1. भगण से बना सवैया
  2. सगण से बना सवैया
  3. जगण से बना सवैया
  4. एकाधिक गणों से बने उपजाति सवैया छंद
- रीति कालिन कवियों ने सवैया छंद का सर्वा. मात्रा में प्रयोग किया।
- सवैया छंद के कुल ग्यारह उपभेद माने जाते हैं।

क्र.स.	सवैया का नाम	वास्तविक लक्षण	प्रत्येक चरण में कुल वर्ण	जाति
1.	भदिरा सवैया	सात भगण + अन्त में गुरू	22 वर्ण	आकृति
2.	मालती सवैया	सात भगण 2 गुरू	23 वर्ण	विकृति
3.	सुमुखी सवैया	7 जगण अन्त में लघु 1 गुरू	23 वर्ण	विकृति
4.	चकोर सवैया	7 भगण, अन्त में 1 गुरू, 1 लघु	23 वर्ण	विकृति
5.	दुर्मिल सवैया	8 सगण	24 वर्ण	संकृति
6.	किरीट सवैया	8 भगण	24 वर्ण	संकृति
7.	अरसात सवैया	7 भगण 1 रगण	24 वर्ण	संकृति
8.	अरविंद सवैया	8 सगण 1 लघु	25 वर्ण	अतिकृति
9.	सुंदरी सवैया	8 सगण 1 गुरू	25 वर्ण	अतिकृति
10.	लवंगलता सवैया	8 जगण 1 लघु	25 वर्ण	अतिकृति
11.	कुंदलता/सुख सवैया	8 सगण 2 लघु	26 वर्ण	उत्कृति

➢ सवैया छंद को याद रखनें का सूत्र :–
22 की **मंदिरा** , **23** का **चसुमा** , **24** घण्टे दुआ करो
22 वर्ण चकोर, सुमुखी, मालती दुर्मिल, अरसात, किरिट
अरविन्द, लवली, सुन्दरी 25 वर्ष में (26 की कुंदलता जैसी लगती है।)

1. मदिरा सवैया – 7 भगण + 1 गुरू 22 वर्ण

(1) तोरि सदासन संकर कौ, सुभ सीय स्वयंवर माहिं बरी
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S
तहि बढ्यौ अभिमान महा, मन मेश्यि नेक न संकुधरी।

S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S
सो अपराध परो तन सों, अब क्यों सुधरै तुमहू धो कहौ,
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S S I S
बाहु सु देहु कुणोरहि केशव आपन घाव को पंथ गहौ।।
S I I S I I S I I S I I S I I S I S S I I S

(2) सिंधु तर्‌यो उनको बनरा, तुम पे धनुरेख गई न तरी
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S
वानर बाँधत सो न बध्यो, उन वारिधि बाँधि क बाट करी।
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S
श्री रघुनाथ प्रताप कि बात, तुम्हें दश कंठ न जाति परी,
S I I S I I S I S S I I S I I S I I S I I S
ते लहु तूलहु पूँछ जरी न जरी जरि लंक जराइ जरी।
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S
नोट :– सवैया छंद में के, को, तो, लघु माना जाता हैं।

2. मालती सवैया :– 7 भगण + 2 गुरू 23 वर्ण

उदाहरण :–

(1) देखि विहाल विवाइन सौं पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S S
हाय महादुख पायो सखा ! तुम आये इतै न कितै दिन खोये।
देखि सुदामा की दीन दशा करूणा करि कै करूणा निधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयों नहिं, नैननि के जल सौं पग धोए।।

(2) दूलह भी रघुनाथ बने , दुलही सिम सुंदर मंदिर माही।
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S S
गावति गीत सबै मिलि सुंदरि , विप्र जुवा जुरि वेद पढ़ाहीं।
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S S

3. सुमुखी सवैया :– 7 जगण , 1 लघु , 1 गुरू 23 वर्ण

उदाहरण :–

(1) हिये वनमाल रसाल धर , सिर मोर किरीट महा ल सिबो।
I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S
कसे कटि पीत पटी , लकुटी कर , आनन पै मुरली रसिबो
I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S
कलीदि कि तीर खड़े बलवीर अहीरन बाँह गये हँ सिबो
I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S
सदा हमरे हिय मंदिर में यह बानक सों करिये बसिबों
I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S

(2) जु लौक लगै सिय राम हिं साथ चलै वन माहिं फिरै न चहैं।
हमैं प्रभु आयुस देहु चलैंर उरे सँग यो कर जोरि कहैं।।
I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S

4. चकोर सवैया :– 7 भगण , 1 गुरू , 1 लघु 23 वर्ण

उदाहरण

(1) भासत ग्वाल सखी वन में हरि राजत तारन में जिमि चन्द
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I
नित्य नयो रचि रास मुद्रा ब्रज में हरि खेलत आन्नद कंद
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I

5. दुर्मिल सवैया :– 8 सगण = 24 वर्ण

उदाहरण :–

(1) सब जाति फटी दुख की दुपटी , कपटी न रहे जहँ एक घटी ।

I I S I I S I I S I I S I I S I I S II S I I S
निपटी रूचि मीचु घटी हु घटी , जग जीव जतीन कि छूटि तटी।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S

(2) पुरते निकसी रघुवीर वधू धरि धीर दये मग में पग द्वैं।
I I S I I S I I S I I S II II I S I I S I I S
कनकी भरि भालकनी जल की पट सूख गये मधुराधुर द्वैं।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S II S

6. किरीट सवैया :— 8 भगण 24 वर्ण

उदाहरण :—

(1) मानुष हौं त वही रसखान बसौ बृज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I
जो पशु हों तो कहा बस मैरू चरौ नित नंद कि धेनु मझारन ।
S II S I I S I I S I I S II S I I S I I S I I

(2) ले नर देह हतौ खल पूजनि या पहुँचा नय पाथ मही महँ।
S I I S I I S II S I I S I I S I I S I I S I I
यो कहि चारिभुजा हरि माथ किरीट धरे जन में पुहुमी महँ।।
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I

7. अरसात सवैया :— 7 भगण + 1 रगण = 24 वर्ण

उदाहरण :—

(1) जो कमला कुच कुंकुम मंडन , पंडित देव अदेव निहा रयो ।
S I I S I I S I I S I I S I I S I IS I I S I S
सो कर मांगन को बलि पै, करतार हु नैं करतार पसारयो ।।
S II S I I S I I S I IS I I S I IS I I S I S

(2) भासत रूद्रजु ध्याननि में पुनि सार सुती जसु बांनिन ठानिये ।
S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I S
नारद ज्ञानिन पानिन गंग सुरा निन में विकटोरिय मानियें।।
S I I S I I S I I S I S I S I S I I S I I S I S

8. अरविंद सवैया :— आठ सगण + 1 लघु

उदाहरण :—

(1) प्रभु व्याप रह्यो सचराचर में तजि बैर सुभक्ति सजौ मतियान।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I
नित राम पदै अरविंदन को मकरंद पियो सुमिलिंद समान ।।
I I S I I S IIS I I S I I S I I S I I S I I S I

(2) सब सों लघु आपहि जानिय जू , यह धर्म सनातन जान सुजान ।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I
जब हीं सुमती अस आनि बसै , उर संपति सर्व विराजत आन।।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I

9. सुन्दरी सवैया :— 8 सगण + 1 गुरू = 25 वर्ण

उदाहरण :—

(1) सुख शांति रहे सब ओर सदा , अविवेक तथा अध पास न आवें।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S S
गुणशील तथा बल बुद्धि बढ़े , हठ वैर विरोध छटे मिट जावें।।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S S

(2) सब उन्नति के पथ में विचरे , रविपूर्ण परस्पर पुण्य कमावें,
I I S I I S I I S I I S I I S I I S II S I I S S
दृढ़ निश्चय और निरामय , होकर निर्भय जीवन में जय पावें।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I S S

10. लंवगलता सवैया :– 8 जगण + 1 लघु = 25 वर्ण

उदाहरण :–

(1) भजौ रघुनंदन पाप निकंदन श्री जगवंदन नित्य हिये धर ।
I S I I S I I S I I S I I S I I S I I
तजो कुमती धरिये सुमती , शुभ रामहि राम रटो निसि वासर ।।
I S I I S I I S I I S I I S I I S I I

11. कुंदलता/ सुख सवैया :– 8 सगण + 2 लघु

उदाहरण :–

(1) सबसौ ललुआ मिलिके रहिये मन जीवन मूरि सुनौ मनमोहन।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I
इमि बोधि खयाय पियाय सखा सँग जाहु कहै मृदु सौ वन जोहन
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I
धरि मात रजाय सु सीस हरी नित यामुन कुच्छ फिरे सह गोपन
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I
यहि भांति हरि जसुदा उपदेसहि भाषत नेह ह सूख न सों धन।
I I S I I S I I S I I S I I S I I S I I

काव्य रस

- संस्कृत काव्य शास्त्र का सर्वाधिक प्राचीन संप्रदाय रस संप्रदाय है।
- **रस शब्द 'रस' धातु में 'अ' (अच्) प्रत्यय जोड़ने से बना है।**
- जिसका सामान्य अर्थ है–**"आनन्द"।**
- काव्य, कथा, नाटक, उपन्यास आदि को पढ़कर, सुनकर या नाटक को देखकर सहृदय श्रोता, पाठक, दर्शक को जिस आनन्द की अनुभूति होती है। उसे ही रस कहते हैं।
- भारतीय परम्परा के अनुसार रस तत्वों का प्रादुर्भाव वेदों से हुआ है। वेदों में **"अथर्ववेद"** को रस का जन्मदाता माना जाता है।
- रस का व्युत्पत्तिपरक 'अर्थ' 'आस्वाद' है कहा भी गया है–
  'रस्यते आस्वाद्यते इति रसः'
  जिसका आस्वादन या स्वाद ग्रहण किया जाए उसे रस कहते हैं।
  सरते इति रसः।
  (जो प्रवाहित होता है उसे रस कहते हैं।)
- **भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में सर्वप्रथम रस का उल्लेख मिलता है।** लेकिन भरतमुनि का मुख्य प्रतिपाद्य रूपक (नाटक) है काव्य नहीं।
- भरतमुनि ने नाट्य के प्रमुख चार अंगों में रस को प्रतिस्थापित किया है जिसमें 1. वस्तु, 2. अभिनय, 3. संगीत, 4. रस। इसमें रस का नाटक की आत्मा होना निर्विवाद सत्य है।
- भरतमुनि ने रस की प्रमुखता को स्वीकार करते हुए कहा है **"न ही रसादृते कष्चिदर्थः प्रवर्तते।"** अर्थात् रस के बिना कोई भी काव्य तत्व कवित्व के साहचर्य में कदापि प्रवृत्त नहीं होता है।
- डॉ. नगेन्द्र ने भरतमुनि विरचित "नाट्यशास्त्र" ग्रंथ में कामसूत्रों के अधिकांश उदाहरणों को देखकर यह तथ्य प्रस्तुत किया कि **"रस का मूल आधार काम सूत्र है।"** कामसूत्र के ही स्रोत अथर्ववेद में निहित है। प्रत्यक्षतः रस का स्वरूप अथर्ववेद में कहीं नहीं मिलता है।
- "रसौ वै रसः" अर्थात् (ब्रह्म ही रस है) यह तैतिरीय उपनिषद् में लिखित है।

रस दशा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

- जिस प्रकार की आत्मा की मुक्तदशा ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।
- राजशेखर ने काव्यपुरूष की कल्पना करते हुए शब्द, अर्थ को उसका शरीर, रस का आत्मा, गुण को शौर्य आदि गुण, अलंकारों को आभूषण आदि मानकर रोचक वर्णन किया है।
- भरतमुनि द्वारा रचित नाट्य शास्त्र रचना रस शास्त्र से संबंधित रचना मानी जाती है इस रचना में कुल 36 अध्याय हैं, इसके **षष्ठ एवं सप्तम अध्यायों में 'रस' और भाव का विवेचन किया गया है।**

रस सूत्र के व्याख्याता आचार्य

- भरतमुनि के रस सूत्र में **'संयोग'** और **'निष्पत्ति'** शब्द की व्याख्या अपेक्षित थी। इस रस सूत्र के प्रमुख व्याख्याता **आचार्य चार** हैं, जिनके नाम और मत क्रमशः इस प्रकार हैं।
  (a) भट्ट लोल्लट
  (b) आचार्य शंकुक
  (c) भट्ट नायक
  (d) आचार्य अभिनव गुप्त (क्रम की ट्रिक–(1. लोल्लट 2. षंकु 3. नायक के गुप्तचर हैं।)

व्याख्याकार	सिद्धांत	संयोग का अर्थ	निष्पत्ति का अर्थ	रस की अवस्थिति
भट्ट लोल्लट (मिमांसा–दर्शन)	उत्पत्तिवाद आरोपवाद प्रतीतवाद भ्रांतिवाद	संबंध–3 प्रकार उत्पादय–उत्पादक पोष्य–पोषक गम्य–गमक	उत्पत्ति प्रतीति पुष्टि	अनुकार्य (वास्तविक रामादि) में

	उपचितिवाद			
श्री शंकुक (न्याय–दर्शन)	अनुमितिवाद कला प्रतीतिवाद	अनुमान (अनुमाप्य–अनुमापक)	अनुमिति	अनुकर्ता (अभिनेता नट) में
भट्टनायक (सांख्य दर्शन)	भुक्तिवाद (भोगवाद)	भोजक–भोज्य (विभावन)	भुक्ति	दर्शक (प्रेक्षक) में
अभिनव गुप्त (शैव–दर्शन)	अभिव्यक्तिवाद, व्यक्तिवाद	व्यंग्य–व्यंजक संबंध (अभिव्यंजना)	अभिव्यक्ति	सामाजिक (सहृदय) में

नोट–'अनुकार्य' और 'अनुकर्ता' काव्य शास्त्र की परिभाषिक शब्दावली है। अनुकार्य से तात्पर्य उस पौराणिक या ऐतिहासिक चरित्र से है जिसका अभिनय किया जा रहा होता है और 'अनुकर्ता' अभिनेता को कहते हैं।

भट्ट लोल्लट का उत्पत्तिवाद

- **रस सूत्र के प्रथम आचार्य भट्ट लोल्लट हैं।**
- **'निष्पत्ति'** का अर्थ उत्पत्ति करने से इनके सिद्धांत को उत्पत्तिवाद कहा जाता है।
- इनके मत के अन्य नाम–आरोपवाद, उपचयवाद, भ्रांतिवाद, प्रतीतवाद हैं।
- इनके सिद्धांत के अनुसार सहृदय नट पर अनुकार्य का आरोप करता है।
- इस सिद्धांत के अनुसार स्थायीभावक को विभाव से उत्पन्न माना गया है, अतः उत्पत्तिवाद कहा जाता है।
- स्थायी भाव ही परिपक्वता को प्राप्त कर रस कहलाता है।
- लोल्लट ने निष्पत्ति का अर्थ उत्पत्ति, प्रतीती, पुष्टि बताया।
- **लोल्लट मूलपात्र (राम आदि पात्र) में ही रस की उत्पत्ति मानते हैं।**
- भट्टलोल्लट ने रस निष्पत्ति के लिए **'तद्रुपतानुसंधान'** शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ है अभिनेताओं में मूल पात्रों के अनुसार गतिविधियों को देखकर भाव उत्पन्न होना।
- भरतमुनि के रस सूत्र में विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी, भाव के संयोग से रस निष्पत्ति मानी गई है, स्थायी भाव का कहीं उल्लेख नहीं है, जबकि **रस निष्पत्ति का मूल आधार स्थायी भाव है।**
- भट्ट लोल्लट ने संयोग का अर्थ संबंध से लिया है तथा तीन प्रकार के संबंध माना है।
  (a) **उत्पाद्य–उत्पादक संबंध**–स्थायी भाव तथा विभाव के मध्य
  (b) **गम्य–गमक संबंध**–स्थायी भाव तथा अनुभावादि के मध्य
  (c) **पोष्य–पोषक संबंध**–स्थायी भाव व संचारी भाव के मध्य
- डॉ. नगेन्द्र ने उत्पत्ति प्रतीति, पुष्टि को मिलाकर उपचिति नाम से पुकारा है।
- **श्री शंकुक ने भट्ट लोल्लट के मत का खण्डन किया है।**

आचार्य शंकुक का अनुमितिवाद

- रस सूत्र के दूसरे व्याख्याता आचार्य शंकुक हैं तथा इन्होंने नैयायिक दर्शन से व्याख्या की है।
- शंकुक के सिद्धांत को **अनुमितिवाद** व **कलाप्रतीतिवाद** कहा जाता है।
- इन्होंने **संयोग का अर्थ अनुमान** (अनुमाप्य–अनुमापक संबंध) व **निष्पत्ति का अर्थ अनुमिति** बताया है।
- न्यायदर्शन में प्रमाण तीन प्रकार के माने गए हैं–
  (a) प्रत्यक्ष प्रमाण
  (b) आप्त प्रमाण
  (c) अनुमान प्रमाण
- शंकुक के अनुमितिवाद में तीसरे प्रकार के प्रमाण (अनुमान प्रमाण) का योगदान रहता है।
- शंकुक के अनुसार 6 रस मुख्य रूप से मूल पात्रों में रहता है लेकिन मंच पर अभिनय करने वाले नट व नटी (अभिनेता) पर सामाजिक मूलपात्रों का अनुमान कर लेता है तो मूल रस का प्रणेता अनुकर्ता (अभिनेता) को माना है।
- इनका सिद्धांत दर्शन शास्त्र के "चित्र तुरंग न्याय" पर आधारित है।

- शंकुक के चित्र तुरंग न्याय के कारण अभिनय तत्व हावी हो गया है और काव्य तत्व गौण
- शंकुक ने सर्वप्रथम स्पष्टतः सहृदयगत वासना का उल्लेख किया है।
- न्यायशास्त्र के अनुसार **प्रतीति चार प्रकार की होती हैं।**
  (a) राम को राम समझना–**सम्यक प्रतीति**
  (b) राम है अथवा राम नहीं है–**संषयात्मक प्रतीति**
  (c) राम को कुछ अन्य समझना–**मिथ्या प्रतीति**
  (d) राम जैसा है–**सादृष्य प्रतीति**
- भट्टनायक ने शंकुक के सिद्धांत की आलोचना की है।

भट्टनायक का भुक्तिवाद

- इस सिद्धांत के **तीसरे व्याख्याता** भट्टनायक हैं। इनका **सिद्धांत भुक्तिवाद** कहलाता है।
- इन्होंने संयोग का अर्थ **भोज्य–भोजक** संबंध तथा **निष्पत्ति का अर्थ 'भुक्ति'** बताया है।
- **भट्टनायक** ने रस की निष्पत्ति के लिए **तीन प्रमुख व्यापार** माने हैं।
  (a) अभिधा
  (b) भावकत्व
  (c) भोजकत्व

अभिधा

- काव्य में प्रयुक्त शब्दों का मुख्य अर्थ ग्रहण करना।

भावकत्व

- विभाव, अनुभाव, व्यभिचारीभाव, स्थायीभावों के आधार पर रस का साधारणीकरण।

भोजकत्व

- सत्व, तम, रज इन तीनों गुणों में से सत्व गुणों की प्रधानता के आधार पर रस का उपभोग करना।
- इनके अनुसार रस की न तो उत्पत्ति होती है और न अनुमिति होती है अपितु रस की भुक्ति होती है।
- **भट्टनायक रसशास्त्र के अन्तर्गत साधारणीकरण का सिद्धांत देने वाले सर्वप्रथम विद्वान माने जाते हैं।**
- अभी तक रस का स्थान रंगमंच था किन्तु भट्टनायक ने उसका स्थान सहृदय सामाजिक का हृदय बताया।
- भट्टनायक के अनुसार श्रव्य काव्य में तीनों व्यापार तथा दृश्य काव्य में अंतिम दो व्यापार होते हैं (भावकत्व, भोजकत्व)।
- रस ब्रह्मानन्द समान है किन्तु ब्रह्मानन्द नहीं है इस मत का प्रतिपादन सर्वप्रथम भट्टनायक के व्याख्या से ही संभव हुआ।
- **अभिनवगुप्त ने इनके सिद्धांत की आलोचना की है।**

अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद

- रस सूत्र के **चौथे व्याख्याता** आचार्य अभिनवगुप्त हैं।
- **इनके अनुसार रस व्यंजना का व्यापार** है। जैसे मिट्टी में व्याप्त गंध जल के छीटें देने से व्यक्त हो जाती है, उसी प्रकार सहृदय सामाजिक के हृदय में वासना रूप से निरंतर विद्यमान स्थायी भाव विभावादि के द्वारा अभिव्यक्त हो जाते हैं।
- इन्होंने **निष्पत्ति का अर्थ "अभिव्यक्ति"** तथा **संयोग का अर्थ "व्यंग्य–व्यंजक संबंध" माना है**।
- अभिनव गुप्त ने भट्टनायक द्वारा प्रतिपादित भावकत्व, भोजकत्व की अवधारणा को निरस्त कर **"व्यंजना की अवधारणा"** को स्वीकार किया।
- इनका रस सिद्धांत आचार्य आनन्दवर्धन द्वारा प्रवर्तित ध्वनि सिद्धांत से प्रभावित माना जाता है।
- विभावादि सामान्य व्यवहार में लौकिक होते हैं, किन्तु काव्य नाटक आदि में वे अलौकिक हो जाते हैं।
- रस ब्रह्मानन्द सहोदर है। रस का आस्वादन एक विलक्षण और लोकातीत अनुभव है।